Tc.No. : GUJHIN00722

पेजः 4, मुल्य 1 रु.

दैनिक

क्रांति समय

संस्थापक / संपादक : सुरेश मौर्या

E-mail: krantisamay@gmail.com, www.krantisamay.com

वर्षः 2 अंकः 212 , 07 जनवरी, रविवार 2018, सूरत, हिन्दी दैनिक मो. 9879141480

4 ओ ब्लॉक आगम नवकार कॉम्पलेक्ष, सचीन रेल्वे स्टेशन के पास, सूरत-गुजरात

सार समाचार

दीनदयाल उपाध्याय का दशर्न भारतीयता को तलाशने का था दर्शन : कोहली

नई दिल्ली। पंडित दीनदयाल उपाध्याय का दर्शन पाश्चात्य दर्शन के चरम काल में भारतीयता को तलाशने का दर्शन था जिसकी शुरु आत उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से ही शुरू हो गई थी। यह बात गुजरात एवं मध्य प्रदेश के राज्यपाल ओपी कोहली ने कही। वह एकात्म मानववाद विजन एंड मिशन विषय पर आयोजित संगोष्ठी में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। कार्यक्रम का आयोजन महाराजा अग्रसेन कॉलेज दिल्ली विविद्यालय द्वारा किया गया था। कोहली ने कहा कि इस दर्शन में स्वामी रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, महात्मा गाँधी आदि का नाम लिया जा सकता है। इस दर्शन में समाज केंद्रित मानव व्यवहार और उससे सम्बद्ध आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक व्यवहार की परिकल्पना प्रस्तुत की गई थी।

संपत्ति के लिए पिता और सौतेली मां को कुल्हाड़ी से काट डाला

बस्ती। बस्ती में हर्रैया थानांतर्गत महूघाट गांव निवासी दो सगे भाइयों ने संपत्ति के लिए पिता और सौतेली मां को कुल्हाड़ी से काट डाला। दोनों ने थाने में पहुंच गुनाह कबूल कर सरेंडर कर दिया। घटना शुक्रवार रात की है। महूघाट निवासी हृदयराम चौहान (55) ने पहली पत्नी की मौत के बाद पिछले साल कप्तानगंज की रहने वाली सुनीता (38) से शादी कर ली थी। पहले से मौजूद दोनों बेटों राजेश चौहान (30) और राजेंद्र चौहान (25) का संपत्ति को लेकर सौतेली मां से अक्सर विवाद होता था। शुक्रवार को भी मां-बाप और दोनों बेटों के बीच जमकर विवाद हुआ। शाम करीब छह बजे झगड़े के दौरान राजेश और राजेंद्र ने हृदयराम और सुनीता पर कुल्हाड़ी से वार कर मार डाला। शव आंगन में पड़ा रहा। पड़ोसियों को भी भनक नहीं लगी। रात करीब दस बजे दोनों थाने पहुँचे और घटना की जानकारी दी। बताया कि मां चाहती थी कि पूरी संपत्ति उसके नाम हो जाए। पिता भी उसी का साथ दे रहे थे। रात 11.00 बजे दोनों के साथ घटनास्थल पहुँची पुलिस ने शव और कुल्हाड़ी को कब्जे में ले लिया।

कानपुर में नहर से मिला मैनपुरी से अगवा छात्र का शव

कानपुर। सूचना पर कानपुर पहुंचे मृतक के ताऊ उदयवीर सिंह। मैनपुरी से अगवा 10वीं के छात्र का शव पनकी नहर में पाया गया। स्कूल वाली बेल्ट से पहचान हो सकी। वह 16 दिसंबर को परीक्षा देने निकला था पर घर नहीं पहुंचा। उसकी साइकिल मैनपुरी के नगला मोती गांव के हजारा नहर के पास मिली थी। आशंका है कि पहले उसका अपहरण, फिर बाद में हत्या कर दी गई। साक्ष्य मिटाने के लिए हत्यारों ने लाश नहर में बहा दी। पुलिस ने शव पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। सूचना के बाद मैनपुरी से छात्र के परिजन भी आ गए। मैनपुरी पुलिस ने भी ककवन थाने से संपर्क किया है। पनकी नहर में गुरुवार रात गुजर रहे लोगों ने एक शव उतराता देखा। यह खबर किसी राहगीर ने दी तो पनकी पुलिस सक्रिय हो गई। पुलिस ने शव को बाहर निकाल कर छानबीन शुरू की। छात्र की कमर में मैनपुरी के नगला मोती गांव स्थित अक्षरा पब्लिक स्कूल की बेल्ट मिली। उसके आधार पर मैनपुरी पुलिस से संपर्क साधा तो पता चला कि अक्षरा स्कूल में पढ़ने वाला दसवीं का छात्र अशोक यादव लापता है। उधर, एसएसपी के निर्देश पर ककवन पुलिस पहले से ही जांच कर रही थी। पुलिस कुछ दिनों पहले क्षेत्र की नहर में शव दिखने की बात कर छानबीन में जुट गई।

मैनपुरी में दर्ज है अपहरण, हत्या की रिपोर्ट

पुलिस के मुताबिक मैनपुरी के ओछा थाना के नगला मोती गांव निवासी रामवीर यादव किसान हैं। उनका बेटा अशोक अक्षरा पब्लिक स्कूल में पढ़ता था। परिजनों का कहना है कि अशोक गत 16 दिसम्बर को परीक्षा देने के लिए साइकिल से स्कूल निकला था।

देवबंद के कई मदरसों में एटीएस के छापे, छह हिरासत में

सहारनपुर। देवबंद में शुक्रवार रात आतंकी इनपुट के बाद एटीएस टीम ने स्थानीय पुलिस के साथ कई मदरसों में छापेमारी की और छह संदिग्ध युवकों को हिरासत में लिया है।

देवबंद के गेस्ट हाउस में इन सभी से पूछताछ की जा रही है। लगातार हो रही एटीएस की कार्रवाई से क्षेत्र में हड़कंप मचा है। बांग्लादेशी आतंकियों के पास देवबंद के पते पर फर्जी पासपोर्ट मिलने के बाद एटीएस ने शिकंजा कसना शुरू कर दिया है।

कानपुर में रिकॉर्ड ठंड, तापमान पहुंचा 3.6 डिग्री सेल्सियस

कानपुर (एजेंसी)। कड़ाके की ठंड और शीतलहर ने शनिवार को कनपुरियों की कंपकंपी छुड़ा दी। सुबह से रात तक चलीं बर्फीली हवाओं ने ऐसा कहर बरपाया कि गलन से हर कोई बेहाल हो उठा। न्यूनतम तापमान पिछले 10 वर्षों में सबसे कम 3.6 डिग्री रिकॉर्ड किया गया। वहीं अधिकतम तापमान 19.6 डिग्री रहा। मौसम विभाग के मुताबिक 6 जनवरी 2008 को न्यूनतम तापमान 3.6 डिग्री रिकॉर्ड किया गया था। हाड़कंपाऊ सर्दी से जनजीवन बेहाल हो गया। दोपहर को हल्की धूप ने और दिक्कतें पैदा कर दीं। मौसम विभाग के मुताबिक सर्दी का प्रकोप अभी जारी रहेगा। तापमान और गिर सकता है। गुरुवार रात से लेकर दूसरे दिन शुक्रवार सुबह तक लोग कांपते रहे। पहाड़ों से आने वाली हवाओं ने गलन बढ़ा दी। सात दिन से लगातार अधिकतम तापमान 16 डिग्री या इससे कम चल रहा है ऐसे में न्यूनतम तापमान में लगातार गिरावट आ रही है। गुरुवार दिन में हल्की धूप निकलने के बावजूद गलन का प्रभाव कम नहीं हुआ। 10 से 15 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से चल रहीं बर्फीली हवाओं ने दोपहिया वाहनों से चल रहे लोगों को खूब छकाया। कई लोग गाड़ियां रोककर अलाव तापते नजर आए तो कुछ ने चाय पीकर सर्दी कम करने की कोशिश की। रिक्शों से चल रहे बच्चों को उनकी मां कई-कई गर्म कपड़े पहनाने के साथ चेहरा ढकी रहीं। सुबह से लेकर रात तक गलन का प्रभाव रहा।

पिछले सात दिन से जारी है गलन

शुक्रवार और शनिवार को अधिकतम और न्यूनतम तापमान में गिरावट दर्ज की गई। शनिवार को अधिकतम पारा 19.6 और न्यूनतम तापमान 3.6 डिग्री रहा। वहीं शुक्रवार को अधिकतम पारा 15.0 डिग्री सेल्सियस रहा तो न्यूनतम तापमान 4.2 डिग्री सेल्सियस। जबकि गुरुवार को अधिकतम तापमान 16.4 डिग्री सेल्सियस था तो न्यूनतम तापमान 5.8 डिग्री सेल्सियस।

पिछले सात दिन से लगातार गलन का प्रभाव बना हुआ है। मौसम वैज्ञानिक डॉ. अनिरुद्ध दुबे ने बताया कि सर्दी अभी इसी तरह अगले चार दिन तक रहने के आसार हैं। रात में कोहरा छाया रहेगा। शीतलहर के कारण रात के तापमान में और गिरावट दर्ज की जा सकती है। दिन के पारे में भी गिरावट की उम्मीद है। मौसम विभाग के अनुसार शीतलहर और गलन का प्रभाव अभी चार दिन और रहेगा। मतलब कड़कड़ाती सर्दी के बीच तापमान अभी और नीचे गिर सकता है।

गेहूं को देगा फायदा, फूलों व दालों को बचाना जरूरी

शीतलहरी के साथ पड़ रही कड़ाके की सर्दी गेहूं व जौ के लिए फायदेमंद है लेकिन दालों और फूलों को बचाना जरूरी है। मौसम विशेषज्ञ के अनुसार अधिकतम और न्यूनतम तापमान सामान्य से काफी कम चल रहा है। साथ ही कई दिन बीत गए हैं और पूरी तरह से धूप नहीं निकल रही है। इससे यह मौसम गेहूं व जौ की फसल के लिए तो फायदेमंद है। दलहनी फसलों के अनुसार तापमान काफी कम चल रहा है। साथ ही पाला भी गिर रहा है। किसान दलहनी फसलों को पाले से बचाने के लिए हल्की सिंचाई जरूर करते रहे। इसी तरह फूलों की खेती को भी बचाना जरूरी है। हल्की सिंचाई के साथ हारमोन का छिड़काव भी करें।

पिछले दिनों का हाल

तिथि	अधिकतम	न्यूनतम
30 दिसंबर	16.7	8.2
31 दिसंबर	15.0	8.2
1 जनवरी	16.6	9.4
2 जनवरी	16.6	7.6
3 जनवरी	15.6	5.6
4 जनवरी	16.4	5.8
5 जनवरी	15.0	4.2

नकलची परीक्षा केंद्र पर तैनात होगी एसटीएफ

कानपुर। नकल के कुख्यात परीक्षा केंद्र की सुरक्षा सख्त होगी। ऐसे चर्चित केंद्र अब एसटीएफ के हवाले होंगे। शुक्रवार को वीडियो कान्फ्रेंसिंग के दौरान शिक्षाधिकारियों को यह जानकारी दी गई। प्रदेश के उप मुख्यमंत्री और माध्यमिक, उच्च शिक्षा मंत्री दिनेश शर्मा ने अफसरों से कहा कि अति संवेदनशील और नकल माफिया के लिए चर्चित परीक्षा केंद्र अब एसटीएफ की निगरानी में होंगे। किसी भी दशा में इस बार परीक्षा में नकल नहीं होगी। कानपुर के जिला विद्यालय निरीक्षक सतीश कुमार तिवारी समेत अन्य अधिकारियों के साथ हुए संवाद में शिक्षा मंत्री ने कहा कि कानपुर नगर के ग्रामीण अंचल के परीक्षा केंद्र, कानपुर देहात के परीक्षा केंद्र अति संवेदनशील की श्रेणी में आते हैं। इसकी लिस्ट तैयार कर ली जाए। इसे एसटीएफ को सौंप दिया जाए।

दबाव पड़ने पर मुझसे बात करें

शिक्षा मंत्री ने कहा कि दबाव चाहें राजनीतिक हो या माफिया स्तर से, उसे बर्दाश्त न करें। इसके लिए अधिकारी अपने जिले के प्रशासनिक व पुलिस अधिकारियों से, अपर मुख्य सचिव स्तर पर या सीधे मुझसे शिकायत कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि परीक्षा के दौरान वह खुद, अपर मुख्य सचिव और बोर्ड के अधिकारी केंद्रों का निरीक्षण करेंगे।

शिक्षा मंत्री ने कहा, यह भी ध्यान रखें

क्रमांक वाली कॉपियां बाटी जाएंगी उसके क्रमांक संग उपस्थिति पत्रक में छात्र का अनुक्रमांक भी लिखा जाएगा। इससे कॉपियों की अदला-बदली नहीं हो सकेगी। इसके अलावा अगर सीसीटीवी किसी विद्यालय में नहीं हैं तो वहां का पूरा स्टाफ निगरानी करेगा।

कांग्रेस का मोदी व केजरीवाल सरकार के खिलाफ धरना-प्रदर्शन

पार्क के स्थान पर स्टेडियम अथवा अस्पताल के अलावा कुछ और बनने पर दी आमरण अनशन की चेतावनी

नई दिल्ली। पूर्व विधायक जयकिशन के नेतृत्व में शुक्रवार को हजारों लोगों और कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने सुलतानपुरी जलेबी चौक पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के खिलाफ धरना-प्रदर्शन किया और पुतले फूंके। इस अवसर पर प्रदर्शनकारियों को संबोधित करते हुए जयकिशन ने कहा कि भाजपा और आम आदमी पार्टी सरकार जनता के कायरे से कोई सरोकार नहीं है। सुलतानपुरी में जलेबी चौक के पास इन्द्रा पार्क की जमीन डीडीए की है। उन्होंने बताया कि बतौर विधायक अपने कार्यकाल के दौरान वर्ष 2011-12 में उन्होंने इस जमीन पर बच्चों के लिए स्टेडियम पास करवाया था। इसका काम भी शुरू हो चुका था, लेकिन ''आप' के मंत्री ने काम रु कवा दिया और पार्क को दिल्ली सरकार का बताकर इसकी चाहरदिवारी बढ़ा दी व सारे गेट बंद करवा दिए। अब भाजपा नेता डीडीए पर दबाव बनाकर स्टेडियम नहीं बनने दे रहे हैं। पूर्व विधायक ने कहा कि यहां के निवासी चाहते हैं कि इस स्थान पर स्टेडियम अथवा अस्पताल बने, लेकिन डीडीए भाजपा के इशारे पर यह जमीन टुकड़ों में बेचना चाहती है।

पार्क में स्टेडियम अथवा अस्पताल के अलावा कुछ और बनाने पर उन्होंने कांग्रेस कार्यकर्ताओं व आम लोगों के साथ इसी मैदान में आमरण अनशन की चेतावनी दी।

इस अवसर पर नवीबक्श, रामसागर गुप्ता, सूरज खंडेलवाल, देवेन्द्र कुमार, नसीम, शबनम रियाज, श्याम लाल, दीपक, चुन्नीलाल, राहुल ढाका, वरुण ढाका, अजय बोहत, महावीर अग्रवाल, जयकिशन पहलवान, विजय भारती, मुकेश, शरीफ कुरैशी, वंदना, कमलेश भारती व चन्द्रो आदि मौजूद थे।

नगर पालिका बोर्ड की पहली बैठक शुरू, 23 प्रस्ताव पेश

हाथरस। नगर पालिका बोर्ड की पहली बैठक शुरू हो गई। इस बहुप्रतीक्षित बैठक में 23 प्रस्तावों पर चर्चा होनी है। शुरुआत में ही बैठक हंगामेदार रही। नगर पालिका अध्यक्ष आशीष शर्मा, स्वदेश आर्य सहित सभी 27 सभासद इस बोर्ड की पहली बैठक में मौजूद हैं। सदर विधायक हरिशंकर माहौर की उपस्थिति भी इस बैठक में है।कुल 23 प्रस्तावों पर इस में चर्चा होनी है। सबसे अहम प्रस्ताव हाउस और वाटर टैक्स को लेकर है। इस पहले प्रस्ताव में प्रस्तावित कर निर्धारण नियमावली पर जो आपत्तियां प्राप्त की गई है उस पर चर्चा हुई ह। इसके साथ ही शहर में नाले-नालियों की और पुलिया के निर्माण, हाथरस के मध्य तालाब चौराहे के सौंदर्यीकरण और इसके साथ ही शहर के घंटाघर के जीर्णोद्धार का प्रस्ताव शामिल किया गया है।

कुमार विास ने गोपाल राय को कटप्पा कहा

आप नेता कुमार विश्वास ने गोपाल राय पर पलटवार किया

नई दिल्ली। राज्यसभा का टिकट न मिलने से आहत आप नेता कुमार विास ने गोपाल राय पर पलटवार किया है। गोपाल राय ने बृहस्पतिवार को विास पर केजरीवाल सरकार के खिलाफ साजिश करने के आरोप लगाए थे। उनके इन आरोपों का जवाब देते हुए कुमार विास ने तंज कसते हुए कहा कि इस माहिष्मति की शिवगामी कोई और है। उन्होंने पत्रकारों के सवालों का जवाब देते हुए गोपाल राय पर तीखा हमला बोला और कहा कि दिल्ली में आप संयोजक, मंत्री, पार्टी प्रवक्ता जैसे 9 पदों पर आसित गोपाल राय जो कार्यकर्ताओं को मीरजाफर कहते हैं। महीनेभर बाद कुंभकर्णी नींद से जागे हैं। विास ने कहा कि पार्टी ने गोपाल राय के बयान से किनारा कर लिया है, दरअसल इस माहिष्मती की असली शिवगामी देवी कोई और है, यहां हर बार नए कटप्पा और अमानत लेकर यहां तक पैदा किए जाते हैं। मेरा अनुरोध उनसे है कि वो भाजपा और कांग्रेस से आए गुप्तास के योगदान का आनंद लें, मेरे शव के साथ छेड़-छाड़ न करें।

उन्होंने कहा कि पिछली बार मैं गोपाल राय के लिए बाबरपुर गया था, रैलियां करने और उनको जितवाने। अब वो गुप्ता जी को ले जाएं, विधायक, सांसद प्रधानमंत्री बनें। किम जोंग ने उन्हें भी बहुत तंग कर रहा है तो लगे हाथ संयुक्त राष्ट्र के प्रमुख भी बन जाएं तो विश्व शांति भी हो जाएगी।

कोहरे का कारण 200 से अधिक फ्लाइटें हुई प्रभावित

पहाड़ों से आ रही है बर्फीली हवा दिल्ली में

एक दो दिन तक गलन वाली सर्दी से राहत नहीं

50 फ्लाइटें हुई निरस्त, एक दर्जन फ्लाइटें हुई डायवर्ट

नई दिल्ली। आईजीआई एयरपोर्ट के तीनों टर्मिनलों पर विमानों की लैंडिग और टेकऑफ कोहरे के कारण प्रभावित हुए हैं। यह स्थिति पिछले पांच दिन से बनी है। एयरपोर्ट सूत्रों के अनुसार गुरुवार रात एयरपोर्ट पर अचानक कोहरा बढ़ गया और दृष्यता गिरकर 50 मीटर से भी कम हो गई। दृष्यता 50 मीटर से कम होते ही एटीसी (एयर ट्रैफिक कंट्रोल) ने विमानों को लैंडिंग और टेक आफ की इजाजत नहीं दी। लैंडिंग की इजाजत न मिलने पर करीब एक दर्जन फ्लाइटों को दूसरे एयरपोर्ट के लिए डायवर्ट किया गया। इसके अलावा आईजीआई एयरपोर्ट से मुबंई ,बंगलूरु, पटना, पुणो जम्मू, श्रीनगर, सहित एक दर्जन से अधिक मार्गों पर जाने वाली 50 से अधिक फ्लाइटें निरस्त की गई और 200 से अधिक फ्लाइटें देरी से आई और रवाना हुई। फ्लाइटों के देरी से आने और जाने के कारण यात्रियों को एयरपोर्ट पर घंटों प्रतीक्षा करनी पड़ी। हालांकि एयरपोर्ट पर डायल द्वारा लांज में बैठने की विशेष व्यवस्था की है। इसके अलावा अन्य व्यवस्थाएं भी की गई है। जिससे कोहरे के कारण विमानों के देरी से आने और जाने के कारण यात्रियों को परेशानी न हो।

दिल में सुराख के मरीज को सर्जरी कर दिया नया जीवन

नई दिल्ली। अपोलो हास्पिटल के कार्डिक सर्जन्स ने दिल में सुराख की अति दुर्लभ सर्जरी कर विनोद कुमार नामक एक मरीज को नया जीवन प्रदान किया है। अस्पताल के वैसुकलर सर्जन डा. मुकेश गोयल ने शुक्रवार को संवाददताओं को यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि इको कार्डियोग्राफी में हृदय से गाढ़ा पदार्थ निकलने की पुष्टि हुई थी। जिससे स्पष्ट हो चुका था कि हृदय के पास में कोई जख्म है। इसके बाद उन्हें हार्ट-लंग मशीन में रखा जो हृदय और फेफड़े का काम संभालता है और कार्डियकसर्जरी संभव होती है। निरीक्षण किया तो पता चला कि हृदय के बाई तरफ एक इंच लंबा जख्म था। इसे नियंत्रित करने के लिए पोटाशियम इंजेक्ट किया गया और जख्म ठीक हो गया। कालका जी के रहने वाले विनोद पेशे से एकाउंटेंट हैं। दुर्लभ सर्जरी : उन्होंने कहा कि अभी तक इस तरह के दो ही मामले नजर आए हैं। ये दोनों ही मरीज उपचार से पहले दम तोड़ चुके थे।

पुलिस ने लिया हिरासत में, बाद में छोड़ा

रास का टिकट मांगने केजरीवाल के घर पहुंची कलावती

नई दिल्ली। आप की पूर्व वालंटियर स्व. संतोष कोली व पूर्व विधायक धर्मेद्र कोली की मां कलावती कोली शुक्रवार को मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के घर राज्यसभा का टिकट मांगने पहुंच गई। वह काफी देर तक केजरीवाल के घर के बाहर संतोष कोली की फोटो लेकर बैठी रहीं, लेकिन केजरीवाल से मुलाकात नहीं हो पायी।

केजरीवाल के घर के बाहर बैठकर कलावती ने कुछ विधायकों को फोन कर समर्थन भी मांगा, लेकिन विधायकों ने समर्थन देने से मना कर दिया। बकौल कलावती, विधायक कह रहे हैं कि वे केजरीवाल के फैसले से बंधे हैं। बहरहाल केजरीवाल से राज्यसभा टिकट की मांग पर अड़ी कलावती को कुछ देर बाद पुलिस ने हिरासत में ले लिया। बाद में रिहा कर दिया। आम आदमी पार्टी में राज्यसभा टिकट बंटने के बाद से ही घमासान तेज हो गया है। जहां एक ओर केजरीवाल पर रपए लेकर टिकट बेचने के आरोप लग रहे हैं। वहीं, राज्यसभा टिकट के लिए पार्टी से जुड़े लोग दावेदारी भी करने लगे हैं। इसी कड़ी में पहला नाम ''आप'' कार्यकर्ता कलावती कोली का है। कलावती ने कहा कि, ''हमने कभी सुशील गुप्ता की शक्ल तक नहीं देखी। मुझे राज्यसभा का टिकट चाहिए। मैं लड़ना चाहती हूं। इसके साथ ही कलावती ने केजरीवाल से सवाल किया कि ''क्या मैं दलित हूं इसलिए मुझे टिकट नहीं दिया जा रहा?

कलावती ने कहा, मैंने सुशील गुप्ता की शक्ल तक नहीं देखी:बता दें, कलावती कोली की बेटी संतोष कोली भी ''आप'' से जुड़ी थीं। उनकी एक सड़क हादसे में मौत हो गई थी। इसके बाद से ही कलावती कोली आप में सक्रिय कार्यकर्ता के तौर पर जुड़ गई। कलावती दिल्ली के सीमापुरी इलाके में पार्टी के लिए काम करती हैं। उनका कहना है कि, ''मैं राज्यसभा का इलेक्शन लड़ना चाहती हूं। सुशील गुप्ता को केजरीवाल ने चुना है। हमने गुप्ता की शक्ल तक नहीं देखी। कलावती ने कहा, ''हमने पार्टी के लिए डंडे खाए, मेरी बेटी ने डंडे खाए और मेरी बेटी ने बलिदान भी दिया।

ये गुप्ता हैं और मैं दलित हूं, क्या इस वजह से मुझे टिकट नहीं मिला? ये सब जाति का भेदभाव है। जब मेरे यहां आए थे तब मैं दलित नहीं थी, मुझे राज्यसभा का टिकट चाहिए, मैं गरीबों के लिए काम करूंगी। कपिल मिश्रा ने भी किया सपोर्ट : इससे पहले कपिल मिश्रा ने एक और ट्वीट किया, जिसमें उन्होंने कलावती कोली और सुशील गुप्ता की तस्वीर लगाकर पूछा कि इनमें किसको राज्यसभा जाना चाहिए? उन्होंने आप की पीएसी और सभी विधायकों से अपील करते हुए कलावती कोली के लिए समर्थन मांगा।

कपिल ने कहा कि कलावती कोली के पास सिर्फ एक कमी है, उनके पास पैसा नहीं है। गुरु वार को एक ट्वीट करते हुए कपिल मिश्रा ने कहा था कि शहीद संतोष कोली की मां को याद रखिए। अरविंद केजरीवाल ने कई सालों तक इनका नमक खाया है।

सदा जवान रहने के लिए मुख का सौंदर्य नहीं, मस्तिष्क की उड़ान जरूरी है -मार्टी बुचेला

आतंकवाद के खिलाफ कार्रवाई

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने पाकिस्तान को दी जाने वाली 25.5 करोड़ डॉलर यानी करीब 16 अरब 26 करोड़ रुपये की मदद रोककर साफ संदेश दिया है कि आतंकवाद के मामले पर किसी प्रकार की छूट नहीं देने वाले। हालांकि स्वयं ट्रंप व उनके प्रशासन ने कई बार पाकिस्तान को चेतावनी दी कि आतंकवाद के खिलाफ कार्रवाई करे, लेकिन वहां के हुक्मरानों ने इसे गंभीरता से नहीं लिया। शायद उन्हें लगता था कि जिस तरह बराक ओबामा व जार्ज बुश के कार्यकाल में भी उनके खिलाफ चेतावनियां आई पर हुआ कुछ नहीं, वैसा ही इस बार भी होगा। जाहिर है, ट्रंप के इस निर्णय से पाकिस्तान को धक्का लगा होगा। वैसे तो पाकिस्तान जताने की कोशिश कर रहा है कि ट्रंप के कदम से वह कतई चिंतित नहीं है, पर वहां प्रधानमंत्री द्वारा आपात बैठक बुलाया जाना अपने आप सब कुछ कह देता है। वास्तव में यह कोई साधारण कदम नहीं है। इसे उठाने के पहले ट्रंप ने नये वर्ष की शुरुआत में जो ट्विट किया उसके निहितार्थ काफी गहरे हैं। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान आतंकवादियों को सुरक्षित पनाहगाह देता रहा और हम अफगानिस्तान में खाक छानते रहे। यहां तक कहा कि पाकिस्तान हमारे नेताओं का मूर्ख मानकर धोखा देता रहा। किसी देश के खिलाफ इससे बड़ी टिप्पणी और कुछ हो ही नहीं सकती। आप एक धोखेबाज देश हो, जो धन लेते हो और हमें मूर्ख बनाते हो कि हम आतंकवाद के खिलाफ कार्रवाई कर रहे हैं। दरअसल, पिछले 15 वर्षो में अमेरिका ने पाकिस्तान को आतंकवाद विरोधी संघर्ष के नाम पर 33 अरब डॉलर यानी 2 लाख 14 हजार करोड़ रुपये से ज्यादा दिया है। ट्रंप के वक्तव्यों से प्रमाणित हुआ है कि भारत का आरोप कतई सच था। यह बात अलग है कि भारत इस मामले में अकेले पाकिस्तान पर आतंकवाद को पोषित-प्रायोजित करने का आरोप लगाता था। प्रश्न है कि धनराशि रोकने तक ही अमेरिका अपने को सीमित रखेगा या इसके आगे की कार्रवाई भी करेगा? इसके लिए हमें समय की प्रतीक्षा करनी होगी लेकिन अमेरिकी प्रशासन ने साफ किया है कि अमेरिका, पाकिस्तान से उम्मीद करता है कि अपनी सरजमीं पर मौजूद आतंकी के खिलाफ निर्णायक कार्रवाई करेगा यानी ट्रंप धन राशि रोकने तक सीमित रखकर पाकिस्तान को इस बात की छूट नहीं दे सकते कि आप अपने यहां आतंकियों के खिलाफ कार्रवाई न करो।

जातिगत समीकरणों

भीमा-कोरेगांव में युद्ध स्मारक पर 200वीं सालगिरह पर दलित जुटान भी सामान्य घटना ही बनकर रह जाता। लेकिन गुजरात चुनावों के दौरान उभरे जातिगत समीकरणों के कारण स्थितियां शायद विस्फोटक होती चली गई। पिछले कुछेक वर्षो में कथित गोरक्षकों की सक्रियता और उत्पीड़न से दलित राजनीति नई करवट बदलने लगी। गुजरात के ऊना में हुई घटना ने जिग्नेश मेवाणी को वह मौका दिया,जिससे उनका कद काफी बढ़ गया। वे चुनाव भी जीत गए और खुलकर दलित-मुस्लिम एकता को भी आगे बढ़ा रहे हैं। कोरेगांव आयोजन को भी उन्होंने यह रूप दिया और जेएनयू के छात्र नेता उमर खालिद को भी वहां बुलाया। ये बदलते समीकरण ही खासकर संघ परिवार और हिंदुत्ववादी संगठनों को असहज कर रहा है। हालांकि इसमें भाजपा की दुविधा भी उजागर होती दिख रही है। दरअसल, दलित राजनीति के पुराने नेताओं मायावती से लेकर महाराष्ट्र में अम्बेडकरवादी पार्टियों के नेताओं से मोहभंग का लाभ भाजपा को 2014 के लोक सभा चुनावों से ही मिलता रहा है।

भाजपा का केंद्रीय नेतृत्व, खासकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने दलित, आदिवासियों और अति पिछड़ों को जोड़ने के लिए कई योजनाएं शुरू कीं और डॉ. भीमराव अम्बेडकर पर फोकस किया। यही नहीं, रामनाथ कोविंद को राष्ट्रपति पद पर आसीन करने में भी यही गणित काम कर रहा था। लेकिन कट्टर हिंदू संगठनों के अपने एजेंडे बार-बार खुलकर सामने आ जा रहे हैं। पुणो में इस पूरे विवाद को दलित बनाम मराठा बनाने की कोशिशें भी दिख रही हैं। हालांकि महाराष्ट्र और खासकर मुंबई, थाणो वगैरह में बंद के दौरान उपद्रव और हिंसा में राज्य सरकार की कुछ नरमी का भी संकेत यही लगाया जा रहा है कि भाजपा दलित विरोधी नहीं दिखना चाहती। लेकिन वह कथित हिंदुत्ववादी नेताओं पर कार्रवाई से भी परहेज कर रही है। वैसे, मेवाणी और उमर खालिद के खिलाफ भड़काऊ भाषण के लिए एफआईआर दायर करने के भी अपने राजनैतिक गणित हो सकते हैं। मेवाणी ने किसी तरह के भड़काऊ भाषण से इनकार किया है। हार्दिक पर भी तमाम मुकदमे लादकर दबाने की कोशिश की गई, लेकिन उससे उनकी लोकप्रियता ही ज्यादा बढ़ी। राजनीति के इस दायरे से बाहर यह भी ध्यान रखना चाहिए कि कहीं यह विवाद बड़े जातीय टकराव का कारण न बने।

सत्संग

चेतन और अचेतन

हमारे भीतर शरीर और मन, ऐसी दो चीजें नहीं हैं। हमारे भीतर चेतन और अचेतन, ऐसी दो चीजें नहीं हैं। हमारे भीतर एक ही अस्तित्व है, जिसके ये दो छोर हैं। और इसलिए किसी भी छोर से प्रभावित किया जा सकता है। तिब्बत में एक प्रयोग है, जिसका नाम हीट-योग है, ऊष्णता का योग। वहां तिब्बत में सैकड़ों फकीर हैं। ऐसे जो नंगे बर्फ पर बैठे रह सकते हैं, और उनके शरीर से पसीना चूता रहता है। इस सबकी वैज्ञानिक जांच-परख हो चुकी है। इस सबकी डाक्टरी जांच-परख हो चुकी है, और चिकित्सक बड़ी मुश्किल में पड़ गए हैं कि यह क्या हो रहा है? एक आदमी बर्फ पर बैठा है नंगा, चारों तरफ बर्फ पड़ रही है, बर्फीली हवाएं बह रही हैं, और उसके शरीर पर पसीना बह रहा है! क्या हुआ है इसको? यह आदमी योग के सूत्र का प्रयोग कर रहा है। इसने मन से मानने से इनकार कर दिया कि बर्फ पड़ रही है। यह आंख बंद करके कह रहा है, बर्फनहीं पड़ रही। आंख बंद करके कह रहा है कि सूरज तपा है, और धूप बरस रही है। और यह आदमी आंख बंद करके कह रहा है कि मैं गरमी से तड़पा जा रहा हूं। शरीर उसका अनुसरण कर रहा है, वह पसीना छोड़ रहा है। दक्षिण में एक योगी थे-ब्रह्मयोगी। उन्होंने कलकत्ता यूनिर्वसटी, रंगून यूनिर्वसटी और ऑक्सफोर्ड, तीनों जगह कुछ प्रयोग करके दिखाए। वे किसी भी तरह का जहर पी लेते थे और आधा घंटे के भीतर उस जहर को शरीर के बाहर पेशाब से निकाल देते थे। किसी भी तरह का जहर उनके खून में कभी मिश्रित नहीं होता था। सब तरह के एक्सरे परीक्षण हुए। और मुश्किल में पड़ गई बात कि क्या मामला है? और वह आदमी इतना ही कहता था कि मैं सिर्फ इतना जानता हूं कि मैं मन को कहता हूं कि मैं स्वीकार नहीं करूंगा जहर। बस इतना मेरा अभ्यास है। लेकिन रंगून यूनिर्वसटी में प्रयोग करने के बाद वे मर गए, जहर खून में पहुंच गया। आधा घंटे तक ही उनका संकल्प काम कर पाता था। इसलिए आधा घंटे के पहले जहर को शरीर के बाहर कर देना जरूरी था। आधा घंटे के बाद उनको भी शक होने लगता था कि कहीं जहर मिल ही न जाए। आधा घंटे तक वे अपने संकल्प को मजबूत रख पाते थे। आधा घंटे के बाद शक उनको भी पकड़ने लगता था कि कहीं जहर मिल न जाए। शक बड़ी अजीब चीज है। जो आदमी आधा घंटे तक जहर को अपने

देश के लोकतंत्र जवाबदेह

सवाल यह है कि क्या आप उस जनता और बौद्धिक वर्ग का विास जीत पाएगी? भ्रष्टाचार उन्मूलन, व्यवस्था परिवर्तन और तमाम उच्च आदशरे के साथ देश के तमाम आंदोलनकारियों, ईमानदार अफ्सरों और बुद्धिजीवियों की सहानुभूति लेकर सत्ता में आई आम आदमी पार्टी अब हम और तुम के झगड़े में उलझ कर रह गई है। अगर कुमार विास के शब्दों में कहें तो इस पार्टी में बाहुबली की तरह तमाम कडप्पा घूम रहे हैं, जो न सिर्फ दूसरे को मारते हैं, बल्कि उनके शवों के साथ छेड़छाड़ करते हैं। हालांकि आम आदमी पार्टी का राज्य सभा का नामांकन देश की एक उदीयमान पार्टी का आंतरिक मामला था।

सतीश पेडणोकर

आप का सिद्धांत क्या सत्ता से चिपके रहना है या उस आंदोलन को आगे बढ़ाना है जिसकी लहर पर सवार होकर वह सत्ता में आई थी? वह आंदोलन जो देश के लोकतंत्र को जवाबदेह और पारदर्शी बनाने के लिए था और अप्रासंगिक होती जा रही संस्थाओं की जगह पर नई संस्थाएं खड़ी करने के लिए था।

आज हालत इतने बदल गए हैं कि यह सवाल भी बेमानी है कि कुमार ने आप के विास को तोड़ा या आप ने कुमार के विास को। सवाल यह है कि क्या आप उस जनता और बौद्धिक वर्ग का विास जीत पाएगी? भ्रष्टाचार उन्मूलन, व्यवस्था परिवर्तन और तमाम उच्च आदशरे के साथ देश के तमाम आंदोलनकारियों, ईमानदार अफ्सरों और बुद्धिजीवियों की सहानुभूति लेकर सत्ता में आई आम आदमी पार्टी अब हम और तुम के झगड़े में उलझ कर रह गई है। अगर कुमार विास के शब्दों में कहें तो इस पार्टी में बाहुबली की तरह तमाम कडप्पा घूम रहे हैं, जो न सिर्फ दूसरे को मारते हैं, बल्कि उनके शवों के साथ छेड़छाड़ करते हैं। हालांकि आम आदमी पार्टी का राज्य सभा का नामांकन देश की एक उदीयमान पार्टी का आंतरिक मामला था और उसे इस निर्णय को इस तरह से करना था कि संगठन मजबूत हो, बाहर उसकी साख बढ़े और राज्य सभा की गरिमा में इजाफा हो। लेकिन तीन सीटों के नामांकन में पार्टी सुप्रीमो अरविंद केजरीवाल ने इतने पैंतरे चल दिए कि आप की छवि एक क्षुद्र निर्णय लेने वाली पार्टी की बन गई है। अगर आप को पहला बड़ा झटका योगेंद्र यादव, प्रशांत भूषण, आनंद कुमार और अजित झा के निष्कासन के साथ मिला था तो दूसरा बड़ा झटका अब कुमार विास को राज्य सभा का टिकट न देने और उसके बदले पार्टी में मचे विद्रोह के साथ मिलने वाला है। कपिल मिश्र ने दिवंगत नेता संतोष कोली की मां कलावती को प्रत्याशी बनाकर चुनौती दे ही डाली है।

आप ने निश्चित तौर पर संजय सिंह को राज्य सभा का उम्मीदवार बनाकर अच्छा निर्णय लिया है क्योंकि वे आंदोलन से निकले हुए नेता हैं और पार्टी की स्थापना से लेकर जुड़े हैं। उनके चयन से पार्टी कार्यकर्ताओं में उत्साह भी है। उनकी उम्मीदवारी का दूसरे दावेदार आशुतोष ने भी समर्थन किया है। लेकिन आप ने कुमार विास और आशुतोष जैसे पार्टी के दो दिग्गजों का पत्ता काटकर अपनी छवि को जो बट्टा लगाया है उसकी भरपाई आसान नहीं है।

इसका खमियाजा उसे संगठन के स्तर पर भी भुगतना पड़ेगा और संगठन के बाहर पार्टी की छवि के स्तर पर भी। राज्य सभा में कांग्रेस के जिन तीन सदस्यों की सीटें खाली हो रही हैं,उनमें जनार्दन द्विवेदी, कर्ण सिंह और परवेज हाशमी के नाम हैं। वे सब राजनीति के चर्चित चेहरे हैं और उनकी उपस्थिति से विपक्ष को यह उम्मीद रहती थी कि जब वे खड़े होंगे तो किसी बात को दमदारी से रखेंगे। सदन भी उन्हें सुनेगा। दिल्ली विधानसभा की 70 में से 67 सीटों पर काबिज होने के कारण उन रिक्त स्थानों की पूर्ति का अवसर आप को मिला है और उसे यह मौका एक स्वर्णिम अवसर की तरह लेना चाहिए था ताकि वह देश के उच्च सदन के मंच पर अपनी उपस्थिति दमदारी से दर्ज कराए। लेकिन एनडी गुप्ता और सुशील गुप्ता के नामांकन से लगता है कि पार्टी ने विशिष्ट लोगों के लिए बने उच्च सदन में सामान्य लोगों को भेज कर वह मौका गंवा दिया। अब दावा किया जा रहा है कि चार्टर्ड एकाउंटेंट एनडी गुप्ता अर्थशास्त्र के विशेषज्ञ हैं और संसद में आर्थिक मामलों पर हस्तक्षेप करेंगे जबकि सुशील गुप्ता शिक्षा और स्वास्य के क्षेत्र में बड़े समाजसेवी हैं और वे हरियाणा में आप को मजबूत करेंगे। हालांकि सुशील गुप्ता इससे पहले कांग्रेस के टिकट पर दिल्ली विधानसभा का चुनाव लड़ चुके थे और बीच में केजरीवाल से दिल्ली के कोष का 854 करोड़ रुपये खर्च करने का हिसाब मांगते घूम रहे थे। लेकिन विडम्बना यह है कि इन नामांकनों पर धन लेकर टिकट देने का आरोप लग रहा है और ऐसा आरोप लगाने वाले भाजपा सांसद परवेश वर्मा, हरीश खुराना और कपिल मिश्रा पर मानहानि का मुकदमा भी कर दिया गया है। लेकिन आप से टूट कर अलग हुए योगेंद्र यादव जो आप के मॉडल को ही सराहते रहते थे और अक्सर कहा करते थे कि केजरीवाल पर पैसे लेकर काम करने के आरोप नहीं लगाया जा सकते, इस बार वे भी संदेह व्यक्त कर रहे हैं। विडम्बना देखिए कि इससे पहले केजरीवाल ने आरबीआई के पूर्व गवर्नर रघुराम राजन और भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश टीएस ठाकुर जैसे भारी-भरकम लोगों को राज्य सभा भेजने के लिए संपर्क किया था। वे दोनों अधिकारी मौजूदा सरकार और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को चुनौती देने वाले रहे हैं और शायद केजरीवाल चाहते रहे हों कि इससे एनडीए सरकार के विरुद्ध उनके संघर्ष को धार मिलेगी। वे शायद मोदी से और पंगा नहीं लेना

चाहते थे और उन्होंने मना कर दिया। ऐसे में केजरीवाल को पार्टी के समर्पित लोगों को आगे करना चाहिए था और अगर बाहर से किसी को लाना ही था तो कम से कम ऐसे लोगों को लाते जो अपने राजनीतिक संघर्षो के लिए समाज में सम्मानजनक स्थान रखते हों। उन्हें नहीं भूलना चाहिए कि एक दौर में उनके साथ मेधा पाटकर, सोनी सोरी, आलोक अग्रवाल और दूसरे तमाम जुझारू सामाजिक कार्यकर्ता जुड़े थे और उन्होंने आप के टिकट पर चुनाव भी लड़ा था। केजरीवाल ने दोनों गुप्ता के जरिये यह संदेश देना चाहा है कि उन्हें मौजूदा सरकार से ज्यादा टकराव नहीं लेना है या फिर यह कहना चाहा है कि पार्टी में उनसे असहमति रखने वाला उनका मित्र नहीं हो सकता। यहां पर कुमार विास द्वारा अपने लिए उद्धृत उनका वह डॉयलाग सटीक लगता है कि-हम तुम्हें मारेंगे, लेकिन शहीद नहीं होने देंगे। हालांकि विास भी पार्टी के बारे में अनुशासित बातें नहीं कर रहे थे और संभव है कि वे भी भाजपा की कठपुतली हों, इसलिए उन्हें राज्य सभा भेजना अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारने जैसा होता, इसके बावजूद पार्टी को उनका उचित विकल्प चुनना था। लेकिन यहां असली सवाल इन हम और तुम के झगड़े में फंसी आप की रणनीति और कार्यनीति से बड़ा है। सवाल यह है कि आप का सिद्धांत क्या सत्ता से चिपके रहना है या उस आंदोलन को आगे बढ़ाना है जिसकी लहर पर सवार होकर वह सत्ता में आई थी? वह आंदोलन जो देश के लोकतंत्र को जवाबदेह और पारदर्शी बनाने के लिए था और अप्रासंगिक होती जा रही संस्थाओं की जगह पर नई संस्थाएं खड़ी करने के लिए था। आज हालत इतने बदल गए हैं कि यह सवाल भी बेमानी है कि कुमार ने आप के विास को तोड़ा या आप ने कुमार के विास को? सवाल यह है कि क्या आप उस जनता और देश के बौद्धिक वर्ग का विास जीत पाएगी जिसका वह कभी दावा कर सकती थी? उसने न सिर्फ जनता के यकीन को तोड़ा है बल्कि इस देश के बारे में अच्छी नीयत से सोचने और संघर्ष करने वालों को भी उदास किया है।

चलते चलते

तोड़-फोड़कारी

बेचारे जेटली जी चुनावी बांड लेकर आए हैं यानी सौ टका सकारात्मक कदम। पर जनाब कृष्णमूर्ति को इसमें भी ऑब्जेक्शन है। बेशक, कभी मुख्य चुनाव आयुक्त रहे हैं। लेकिन इसका मतलब यह थोड़े ही है कि हर चीज पर ऑब्जेक्शन ही करेंगे? पर कर रहे हैं। कह रहे हैं कि इससे कॉरपोरेटों और राजनीतिक दलों की सांठगांठ नहीं टूटेगी। पर तोड़नी ही क्यों है

यह तो एकदम नकारात्मक सोच का मामला है। तोड़-फोड़कारी। निर्माण की जगह ध्वंस का स्वर। बेचारे जेटली जी चुनावी बांड लेकर आए हैं यानी सौ टका सकारात्मक कदम। पर जनाब कृष्णमूर्ति को इसमें भी ऑब्जेक्शन है। बेशक, कभी मुख्य चुनाव आयुक्त रहे हैं। लेकिन इसका मतलब यह थोड़े ही है कि हर चीज पर ऑब्जेक्शन ही करेंगे? पर कर रहे हैं। कह रहे हैं कि इससे कॉरपोरेटों और राजनीतिक दलों की सांठगांठ नहीं टूटेगी। पर तोड़नी ही क्यों है कॉरपोरेटों और राजनीतिक दलों की सांठगांठ? बेचारों ने कितनी तो मुश्किल से बनाई है। बनी रहने दें। जरा सकारात्मक सोचें!इस सांठगांठ में लोगों को प्रॉब्लम क्या है? कॉरपोरेट वाले चंदे दे रहे हैं। दुअन्निया-चवान्निया नहीं, सैकड़ों-करोड़ों। जिस पार्टी को दिल करे, उसे चंदे दे रहे हैं। और बड़ी-बड़ी पार्टियां खुशी-खुशी सैकड़ों करोड़ के चंदे ले रही हैं। देने वाला खुशी से दे रहा है, लेने वाला खुशी-खुशी ले रहा है। इसमें और किसी को प्रॉब्लम क्यों हो? पर है। लाल झंडे वालों की हम नहीं कहते, उन्हें तो कॉरपोरेटों के पैसे से ही प्रॉब्लम है। उनका बस चले तो बड़ी पार्टियों के कॉरपोरेट चंदे ही बंद करा दें। कहते हैं कि हम कॉरपोरेट चंदे नहीं लेते। खट्टे अंगूर। हर वक्त अपने दरवाजे पर मुर्दाबाद-मुर्दाबाद करने वालों को कोई कॉरपोरेट चंदा देगा भी क्यों? लेकिन, जिन्हें दे रहे हैं, उन्हें तो लेने दें। पर कृष्णमूर्ति को क्या हो गया? कह रहे हैं कि चुनावी बांड, चंदे को साफ-सुथरा करने की दिशा में कदम नहीं है। स्वच्छता के जमाने में साफ-सुथरेपन को बुरा कौन कहेगा? फिर भी साफ-सुथरापन है नकारात्मक ही-मैले-कुचैलेपन का अभाव! रही बात बांड योजना में पारदर्शिता न होने की तो हर चीज में पारदर्शिता भी अच्छी नहीं है। वह तो वहां होती है, जहां पर्दा नहीं होता। हर जगह बेपर्दगी भी अच्छी नहीं है। वहां तो हरगिज नहीं, जहां मियां-बीवी वाली रजामंदी का मामला हो। कृष्णमूर्ति जी की मानें तो इस योजना से पार्टियों में धन का बोलबाला बढ़ सकता है। लेकिन धन से ज्यादा धनात्मक क्या होगा? बढ़ने दो, धन का बोलबाला अच्छा है।

फोटोग्राफी...

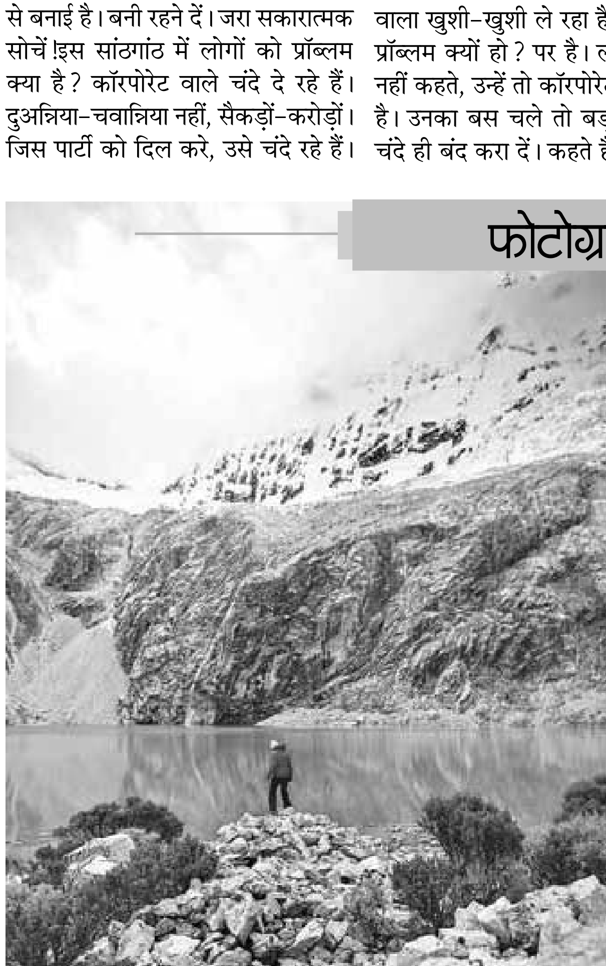

15 हजार फीट ऊंचाई पर जहां एक घंटे रुकना मुश्किल, वहां बिताए 24 घंटे

यह फोटो पेरु की 'लागुना 69' झील का है, जो पश्चिमी क्षेत्र हॉसकारन नेशनल पार्क में स्थित है। इसका निर्माण ग्लेशयिर के पानी से हुआ है। इस जगह पर किसी के भी लिए एक घंटे रुकना मुश्किल होता है क्योंकि तापमान बहुत कम होता है और दूर तक आबादी वाला कोई क्षेत्र नहीं है। लेकिन, नीदरलैंड्स मूल के फोटोग्राफर क्रिस कोनिग ने वहां पूरे 24 घंटे बिताए। उन्होंने कहा, मुझे इस जगह की ज्यादा जानकारी नहीं थी। रात में वन्यजीवों की आवाज आ रही थी, लेकिन जैसे-तैसे मैं एक दिन पूरा करना चाहता था और मैं इसमें सफल रहा। क्रिस सुबह साढ़े पांच बजे उठ गए लेकिन सूर्योदय नहीं हुआ था। कुछ ही देर बाद सामने ग्लेशयिर पर सूरज की रोशनी पड़नी शुरू हुई और पूरा वातावरण चमक गया। वहां प्रत्येक 200 मीटर की ऊंचाई पर तापमान 1 डिग्री सेल्सियस कम होने लगता है। दिन के उजाले में रहा जा सकता है, लेकिन रात बिताना बहुत मुश्किल है।

‡ Instagram.com

'विश्व नेता पृथ्वी के साथ गरीबों का दर्द भी सुनें'

ईसाई धर्मगुरु पोप फ्रांसिस विज्ञान और जलवायु परिवर्तन पर बहुत विश्वास करते हैं। उन्होंने मौसम परिवर्तन पर कहा कि विश्व नेता पृथ्वी और गरीबों के कराहने की आवाज भी सुनें। उन्होंने कहा कि आज पारिस्थिति की (इकोलॉजी) में बदलाव का सबसे ज्यादा खामियाजा इन्हें ही भुगतना पड़ रहा है। पोप फ्रांसिस ने 'वर्ल्ड डे ऑफ प्रेयर फॉर द केयर ऑफ क्रिएशन' कार्यक्रम में विश्व नेताओं को संबोधित करते हुए यह कहा। पहले भी वे कई विश्व नेताओं को चर्चा के दौरान इस बारे में कह चुके हैं। नीतियों में इसका विशेष ख्याल रखा जाना चाहिए।

''स्कूल चलो'

राष्ट्रपति स्वर्गीय डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने कहा था कि हमारे इस देश के सबसे अच्छे दिमाग स्कूलों में क्लासरूम की आखिरी बेंच पर भी मिल सकते हैं..। यानी क्लास रूम की आखिरी पंक्ति पर बैठने वाले बच्चों की प्रतिभा को नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए। मगर संसाधनविहीन यूपी के सरकारी स्कूल मिसाइलमैन के इस स्वप्न को आखिर, कैसे साकार कर पाएंगे जब वे स्कूली बच्चों को मूलभूत सुविधाएं ही मुहैया नहीं करवा पा रहे हैं। बताते चलें कि 3 अक्टूबर, 2017 को उत्तर प्रदेश सरकार ने यह आदेश दिया कि राज्य के सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों को स्वेटर, जूते और मोजे दिए जाएंगे ताकि बच्चों को ठंड से बचाया जा सके। जानना दिलचस्प होगा कि सरकार ने इस योजना को लागू करने के लिए 300 करोड़ रुपये का बजट भी तैयार कर लिया, लेकिन स्वेटर व मोजे बच्चों तक अभी भी नहीं पहुंच पाए हैं जबकि सर्दी पूरे चरम पर पहुंच चुकी है। प्रतीत होता है कि आलस वाली ठंड और लापरवाही से भरी सर्द हवाओं ने उत्तर प्रदेश के शिक्षा विभाग की कार्यपण्राली को जाम कर दिया है, तभी शिक्षा विभाग के अधिकारी अपनी सरकार के दिए हुए आदेश को पूरा नहीं कर पा रहे हैं। इस योजना को अमली जामा पहनाने में जिस तरह की देर हो रही है, उसे देखकर लगता है कि इन स्कूली बच्चों को जब तक स्वेटर तब मिलेंगे जब तक सर्दियां शायद जा चुकी होंगी। अब सवाल यह है कि गर्मियों में स्वेटर देने से बच्चों को क्या फायदा होगा! उल्लेखनीय है कि उत्तर प्रदेश के बेसिक शिक्षा विभाग के करीब डेढ़ लाख स्कूल हैं, और इन स्कूलों में करीब 1 करोड़ 48 लाख बच्चे पढ़ते हैं। अगर समय पर इन बच्चों को स्वेटर, जूते और मोजे उपलब्ध करवा दिए जाते तो उन्हें इस ठंड से थोड़ी राहत मिल जाती। सर्दी का मौसम में आम तौर पर कमजोर लोगों के लिए सावधानी बरतने वाला होता है, फिर स्कूल जाने वाले नन्हें मुन्ने बिना पूरी यूनीफार्म के स्कूल कैसे जाएं। शायद इसीलिए ठिठुरती सर्दी में सरकारी स्कूलों में बच्चों की संख्या भी खासी कम नजर आ रही है। पिछले छह वर्षों में उत्तर प्रदेश की सरकारें छह लाख बच्चों को किताबें उपलब्ध करवाने में भी नाकाम रही हैं। पिछले छह वर्षों में 97 लाख बच्चों को स्कूल की यूनिफार्म भी पूरी उपलब्ध नहीं करवाई गई है। यही नहीं, इन बच्चों के लिए, स्कूलों में बेंचों की भी बड़ी संख्या में दरकार है। विचार करने वाली बात है कि सरकारी प्राइमरी स्कूलों में मूलभूत सुविधाएं मुहैया कराए बिना क्या हम सर्व शिक्षा अभियान को सार्थक कर पाएंगे? कैग की रिपोर्ट के मुताबिक उत्तर प्रदेश में वर्ष 2011 से लेकर 2016 के बीच आठवीं कक्षा तक पहुंचते-पहुंचते एक करोड़ 21 लाख से ज्यादा बच्चों ने स्कूल छोड़ दिया। इस रिपोर्ट के मुताबिक देश के 8 करोड़ 40 लाख बच्चे स्कूल नहीं जा पाते। स्कूलों में स्वच्छता व शौचालय की स्थिति भी काफी दयनीय है। इस मुद्दे को हल्के में कतई नहीं लिया जाना चाहिए। अब आप खुद ही सोचिए कि विश्वगुरु बनने का सपना देखने वाले देश में बच्चे किन स्थितियों में स्कूल छोड़ रहे हैं, । एक और सरकार पूरा जोर लगाकर ''स्कूल चलो' का नारा बुलंद करती है, लेकिन जब बुनियादी सुविधाएं ही नहीं होंगी तो बच्चे स्कूल कैसे जाएंगे? कैग की रिपोर्ट बताती है कि हमारी शिक्षा व्यवस्था की नींव कितनी खोखली है। और जब नींव ही खोखली होगी तो उस पर एक मजबूत इमारत की कल्पना कैसे की जा सकती है! बच्चे देश का भविष्य होते हैं, लेकिन उनका वर्तमान इतना कष्टदायक नहीं होना चाहिए क्योंकि कष्ट में पलने वाले बच्चे अक्सर बड़े होकर कठोर हो जाते हैं। इसीलिए हमें इस तस्वीर को बदलना होगा। यह काम मुश्किल जरूर है, लेकिन नामुमकिन नहीं।

साहित्य

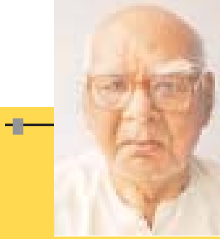

पीठ फेरते ही बरसात हुई

परंपरा और अधुनातन के बीच में एक सुदृढ और सिद्ध सेतु थे डा. भवदेव पांडेय। उन्हें स्मरण कर रहे हैं उनके पुत्र यथार्थ। बाबू जी ने उपनयन में हमें गुरुमंत्र दिया था, इसलिए वे हमारे गुरु भी थे। वे अपने शिष्यों को अपनी अमूल्य थाती मानते थे। लेखन में पाठक के लोकतंत्र की तरह अध्यापन में शिष्य का लोकतंत्र उनके लिए सबसे बडा सम्भरक था, इसलिए उसी शिष्य-समाज से जुडकर उनके कविर्मनीषी परिभू स्वयंभू रूप की स्मरणांजलि ज्यादा समीचीन होगी।

व्यंग्य

भाषण में क्या धरा है

नाम में कुछ नहीं रखा है, यह सीख तो अब से बहुत पहले ही एक बड़ा साहित्यकार दे गया था। काम में कुछ नहीं धरा है, यह बात कम से पिछले कुछ दशकों में तो बार-बार साबित हुई है। ज्यादा पीछे क्यों जाएं, कीमतों का मामला हो तो और काले धन का मामला हो तो, बार-बार यह साबित हुआ है कि किसी में कुछ नहीं धरा है, न काम में और न करने में। उधर पिछले दो-तीन साल में यह दायरा और आगे बढ़ा है। किसी का नाम और किसी की तसवीर छपने से बार-बार यह साबित हुआ है कि तसवीर में भी कुछ नहीं धरा।

बहरहाल, अपने विदेश मंत्री जनाब एसएम कृष्णा ने तो किसी में कुछ नहीं धरा है उर्फ की फर्क पैंदा है के इस दर्शन को एक नई ऊंचाई पर पहुंचा दिया है। संयुक्त राष्ट्र की एक सभा में पुर्तगाल के विदेश मंत्री का भाषण पढ़ने से शुरुआत कर उन्होंने विषयांतर करके भी एक नया संदेश दिया है-भाषण में भी कुछ नहीं रखा है।

अगर थोड़ा गहराई से देखा जाए, तो यह सारी दुनिया के लिए एकता का एक अनोखा और अभूतपूर्व संदेश है। अगर हरेक देश का विदेश मंत्री इसी तरह से दूसरे सभी देशों के विदेश मंत्रियों के भाषण को अपना ही मानना शुरू कर दे, तो दुनिया में देश-विदेश का भेद ही मिट जाएगा और दुनिया एक होगी। ऐसे में, जाहिर है कि मानव जाति को भी एक होना ही पड़ेगा। अब भाषण चाहे गली-मोहल्ले का हो या संयुक्त राष्ट्र का, पुर्तगाल का हो या इंडिया का, सभी भाषण एक ही तरह के होते हैं। वास्तव में इस भाषण बदल के पीछे पर्यावरण की रक्षा की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल भी छिपी हुई है। अगर सभी लोगों द्वारा और सभी स्तरों पर एक ही भाषण से काम चलाया जाए, तो सोचिए कि कितनी ऊर्जा, कितने कागज, कितनी स्याही आदि की बचत होगी। और ध्वनि प्रदूषण में भी कितनी कमी होगी! इस सबके अलावा यह तो हमारी संस्कृति के ही अनुरूप है। अंगरेजों का अनुकरण करना हमारी संस्कृति है। आगे-आगे भाषण करने वाला भी अग्रज ही हुआ। उसका भाषण पढ़ दिया, तो क्या गुनाह कर दिया! फिर बहुत ताकतवर न सही, पर पुर्तगाल है तो विकसित दुनिया का ही हिस्सा। विकसित दुनिया का अनुसरण करेंगे, तभी तो विकसितों वाली गड्डी पर चढ़ेंगे। पता नहीं, क्यों हमारे विरोधियों को इसमें देश की भद्द पिटती दिखाई दे रही है। अगर यह गलती है, तो ओबामा साहब भी हमसे पहले ऐसी गलती कर चुके हैं। हम बेहतरीन कंपनी में हैं। हम गर्व से कहते हैं कि हां, हमने गलती की है। यस वी कैन! हां, हम बराक ओबामा जी की राह पर चल रहे हैं! इससे ज्यादा और भला क्या चाहिए।

कुर्तुल आपा को आखिरी सलाम

संस्मरण

कुर्तुल आपा कल हमें छोड़कर चली गईं। इस्मत आपा ने बहुत पहले ही इस फानी जगत को अलविदा कह दिया था। लग रहा है, उर्दू साहित्य का कोई अमिट हस्ताक्षर नहीं, बल्कि हमारी जिंदगी से साँस चली गई हो।'आग का दरिया' जब पहली बार पढ़कर खत्म की थी, तभी से यह सवाल परेशान करता रहा कि अब तक यह किताब कहाँ थी। यह पहले क्यों न मिली। हिंदी में इसका कोई जिक्र ही नहीं होता। सबकुछ कहा-सुना जाता है, पर 'आग का दरिया' लावारिस किसी कोने में पड़ी है, जबकि इस कद और वजन की कोई दूसरी कृति समूचे उर्दू और हिंदी साहित्य में ढूँढे से भी न मिले।कुर्तुल-ऐन-हैदर की उम्र तब मात्र 32 वर्ष थी, जब उन्होंने 'आग का दरिया' लिखा था। 'आग का दरिया' सचमुच आग का दरिया ही था। इस उपन्यास ने ऐसी आग लगाई थी, जिसकी तपिश आज भी महसूस होती है। किस्सागोई के बहाने इतिहास कहने की यह शैली कुर्तुल आपा की अपनी विशेषता थी। बुद्ध के युग से लेकर ब्रिटिश हुकूमत के दौर और उसके बाद आजाद हिंदुस्तान की जैसी यथार्थ तस्वीर उन्होंने कथा के शिल्प में बुनी है, वह इतिहास को देखने की एक नई नजर देती है। अँग्रेजों द्वारा भारत के सांस्कृतिक मानस में दखल और सेंधमारी का इतिहास उपन्यास बहुत विश्वसनीय तरीके से हमें बताता है। यह उपन्यास वास्तव में किस्सागोई की शक्ल में भारत के सांस्कृतिक इतिहास का सबसे प्रामाणिक और भरोसेमंद दस्तावेज है।ऐसा ही एक और उपन्यास 'आखिरी-ए-शब के हमसफर', हिंदी में जिसका तर्जुमा 'निशांत के सहयात्री' नाम से हुआ है, जंग-ए-आजादी के दौर में बंगाल और वर्तमान बांग्लादेश की सीमा पर रह रहे कुछ परिवारों की कहानी है और उसकहानी के बहाने हिंदुस्तान के उच्च वर्ग और आजादी की लड़ाई में उनकी भूमिका की पड़ताल भी। इस बहाने पल-पल बदलते जीवन और मनुष्य के अंतर्मन की कुछ बारीक झलकियाँ हैं और एक ऐसी आरोह-अवरोह से लबरेज अद्भुत किस्सागोई कि हाथ से लगी किताब आखिरी पन्ने तक पहुँचने से पहले छूटती ही नहीं।सन् 1927 में अलीगढ़ के आला घराने में कुर्तुल-ऐन-हैदर का जन्म हुआ था। माता-पिता दोनों ही अफसानानिगार थे। उन्हें भी किस्सागोई की लत बचपन से ही लग गई थी। वह लिखती हैं कि लिखे बगैर मेरा दिन पूरा नहीं होता। लिखना मेरे लिए मेरे रोजमर्रा के कामों का हिस्सा है। आपा उर्दू में लिखती और अँग्रेजी में पत्रकारिता करती थीं। 'इलस्ट्रेटेड वीकली', 'द डेली टेलीग्राफ' और 'इंप्रिंट' में उन्होंने काम किया। काफी समय तक बीबीसी से भी जुड़ी रहीं। मर्दों की दुनिया के प्रतिजज्बाती न होकर, उसे खुली निगाह से देखा-परखा और ताउम्र अकेली रहीं। दुनिया घूमने का उन्हें बेतरह शौक था। उन्होंने बड़ी सैर की, जिसका असर उनके लेखन में भी दिखता है। 'अगले जनम मोहे बिटिया न कीजो' की नायिका दुनिया की जाने किन-किन जगहों में भटककर मुंबई की उन्हीं गलियों में वापस लौट आती है, जहाँ से उसने अपने सफर की शुरुआत की थी। आपा से मेरी पहली मुलाकात इसी किताब के जरिए हुई थी। उसी का असर था, जो किताब के दबीज आकर और अपनी कम उम्र के बावजूद मैं 'आग का दरिया' पढ़ने का साहस जुटा पाई। उनसे मिलने का नसीब कभी नहीं हुआ, पर उन्हें पढ़ते हुए जैसी झुरझुरी-सी महसूस होती थी, पुस्तक के साथ मन ख्यालों में उस कलम की भी कल्पना करने लगता, जिससे यह शब्द फूटे हैं, और एक ऐसी शख्सियत आँखों के सामने उभरती, जिसके सामने यह संसार बहुत बौना जान पड़ता है। पिछले कुछ समय से यह बात मुझे निरंतर परेशान कर रही थी कि हिंदी के लोग किस गहरी नींद में सोए हैं। कुर्तुल आपा के पास विचारों और अनुभवों का तो अकूत खजाना है। उसका एक हिस्सा भी अगर हम छू सकें, तो हिंदी साहित्य और हिंदी पाठकों का कैसा भला होगा, इसका अंदाजा शायद हमें भी दूर-दूर तक नहीं है। मुझे लगता, राजधानी हिंदी के दिग्गजों-विद्वानों से भरी है, पर किसी को यह ख्याल क्यों नहीं आ रहा। हिंदी की पत्रिकाएँ नामवरों से लेकर जाने किन-किन वरों के ऊलजलूल साक्षात्कारों से भरी होती हैं, पर उसी दिल्ली शहर के किसी गुमनाम घर में पड़ी हमारी प्यारी आपा की कोई सुध क्यों नहीं ले रहा। लोग बेचैन नहीं हैं कि जाते-जाते उस अथाह समंदर की कुछ बूँदें ही हम समेट लें, अपने आने वाले समय के लिए।

पर नहीं। ऐसा कुछ न हुआ। आपा हमें छोड़कर चली गईं और हमारे लिए छोड़ गई हैं, 'एक लड़की की जिंदगी', 'अगले जनम मोहे बिटिया न कीजो', 'चाँदनी बेगम', 'आखिरी-ए-शब के हमसफर', 'गर्दिश-ए-रंगे चमन' 'मेरे भी सनमखाने' और 'शफीनाए गमे दिल' के रूप में शब्दों का ऐसा अनोखा संसार, जिसकी यात्रा के आनंद से गुजरने का सुख इस दुनिया के सबसे बदनसीबों के नसीब में ही नहीं होगा।

साहित्य के सामंत

1960 के आसपास लिखी अपनी प्रसिद्ध कविता अंधेरे में में मुक्तिबोध ने कहा था- अब अभिव्यक्ति के सारे खतरे/ उठाने ही होंगे/ तोड़ने होंगे ही मठ और गढ़ सब..। लेकिन जैसा कि कविताओं के साथ अक्सर होता है, उन्हें पढ़ाने वाले और उन पर बहस करने वाले लोग कई बार उनके वे अर्थ भी निकाल लेते हैं, जिसके विरोध में कविता खड़ी थी। मुक्तिबोध की इस कविता को भी हिंदी साहित्य की दुनिया ने शायद इसी तरह पढ़ा है। जो मठ और गढ़ टूटने चाहिए थे, उन्होंने अपनी दीवारों पर सीमेंट और महंगे पेंट की एक-एक परत और चढ़ा ली। दरअसल आजादी के बाद के हिंदी साहित्य का इतिहास एक तरह से मठों और गढ़ों की आपसी टकराहट और इस प्रक्रिया में इनके बनने-बिगड़ने का ही इतिहास है। इसीलिए हिंदी की साहित्यिक दुनिया रचनाकारों की न रहकर गिरोहों की दुनिया में तब्दील हो गई है। यह दौर सबसे बुरा है, इसे कई बातों से समझा जा सकता है। एक ओर जहां हिंदी साहित्य आज पाठकों की कमी से जूझ रहा है, तो वहीं लेखकों की दुनिया सिर्फ कुछ सैकड़ा लोगों तक सिमट गई है। एक ठीक-ठाक स्थापित लेखक बताते हैं कि इनमें से बमुश्किल 50 ही ऐसे होंगे, वे भी शहरों में रहने वाले लेखक, जो कभी अपने काम से, तो कभी अपनी फोन कॉलों के नेटवर्क से मुख्यधारा में बने रहते हैं। इन 50 में से भी तीन-चार ही ऐसे हैं, जिनकी हिंदी में 'स्टार वैल्यू' है। बहुत बार तो लेखक के रूप में इनके काम से इनकी इस 'स्टार वैल्यू' का कोई लेना-देना भी नहीं है।

हिन्दी का गला घुट रहा है!

महावीर शर्मा

अंग्रेज़ी-पुच्छलतारे नुमा व्यक्ति जब बातचीत में हिन्दी के शब्दों के अंत में जानबूझ कर व्यर्थ में ही आ की पूंछ लगा कर उसका सौंदर्य नष्ट कर देते हैं, जब जी टीवी द्वारा इंग्लैंड में आयोजित एक सजीव कार्यक्रम में जहां लगभग 100 हिन्दी-भाषी वाद-विवाद में भाग ले रहे हों और एक हिन्दू भारतीय प्रौढ़ सज्जन जब गर्व से सिर उठा कर हवन कुंड को हवना कुंडा कह रहा हो तो हिन्दी भाषा कराहने लगती है, उसका गला घुटने लगता है। यह ठीक है कि अधिकांश कार्यवाही अंग्रेजी में ही चल रही थी किंतु अंग्रेजी में बोलने का अर्थ यह नहीं है कि उन्हें हिन्दी शब्दों को कुरूप बना देने का अधिकार मिल गया हो। वे यह भी नहीं सोचते कि इस प्रकार विकृत उच्चारण से शब्दों के अर्थ और भाव तक बदल जाते हैं। कुंड और कुंडा दोनों शब्द भिन्न संज्ञा के द्योतक हैं। श्रीमान, सुना है यहां एक संस्था या केंद्र है जहां योग की शिक्षा दी जाती है, आप बताने का कष्ट करेंगे कि कहां है? आपका मतलब है योगा-सेंटर? महाशय ने तपाक से अंग्रेजी-कूप में से मंडूक की तरह उचक कर योग शब्द का अंग्रेजीकरण कर योगा बना डाला। यह बात थी दिल्ली के करौल बाग क्षेत्र की। यह मैं मानता हूं कि रोमन लिपि में अहिन्दी भाषियों के हिन्दी शब्दों के उच्चारण में त्रुटियां आना स्वाभाविक है, किन्तु हिन्दी-भाषी लोगों का हमारी राष्ट्र-भाषा के प्रति कर्तव्य है कि जानबूझ कर भाषा का मुख मलिन ना हो। यदि हम उन शब्दों को अंग्रेज लोगों के सामने उन्हीं का अनुसरण ना करके शब्दों का शुद्ध उच्चारण करें तो वे लोग स्वत: ही ठीक उच्चारण करके आपका धन्यवाद भी करेंगे। यह मेरा अपना निजी अनुभव है। कुछ निजी अनुभव यहां देने असंगत नहीं होंगे और आप स्वयं निर्णय कीजिए कि हम हिन्दी शब्दों के अंग्रेजीकरण उच्चारण में क्यों गर्वित होते हैं। मैं इंग्लैंड के एक छोटे से नगर में एक स्कूल में अध्यापन-कार्य करता था। उसी स्कूल में सांयकाल के समय बड़ी आयु के लोगों के लिए भी कुछ विषयों की सुविधा थी। अन्य विषयों के साथ योगाभ्यास की कक्षा भी चलती थीं जो हम भारतीयों के लिये बड़े गर्व की बात थी। यद्यपि मेरा उस विभाग से संबंध नहीं था पर उसके प्रिंसिपल मुझे अच्छी तरह जानते थे। योग की कक्षाएं एक भारतीय शिक्षक लेते थे जिन्होंने हिन्दी-भाषी उत्तर प्रदेश में ही शिक्षा प्राप्त की थी, हठयोग का बहुत अच्छा ज्ञान था। मुझे भी हठयोग में रुचि थी, इसीलिए उनसे अच्छी जान-पहचान हो गई थी। एक बार उन्हें किसी कारण एक सप्ताह के लिए कहीं जाना पड़ा तो प्रिंसिपल ने पूछा कि मैं यदि एक सप्ताह के लिए योग की कक्षा ले सकूं। पांच दिन के लिए दो घंटे प्रतिदिन की बात थी। मैंने स्वीकार कर कार्य आरम्भ कर दिया। 20 मिली जुली आयु के अंग्रेज पुरुष और स्त्रियां थीं।

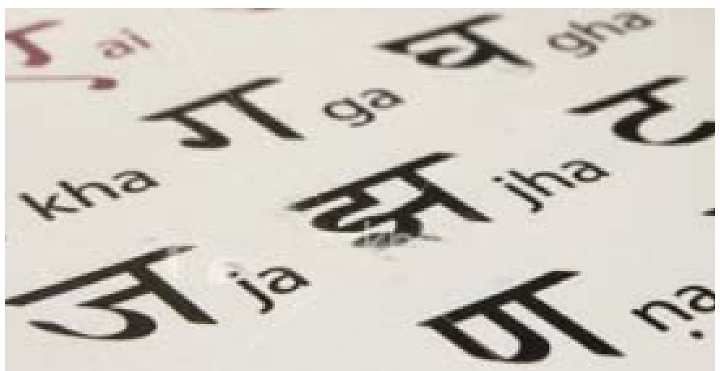

परिचय देने के पश्चात एक प्रौढ़ महिला ने पूछा, आज आप कौन सा असाना सिखायेंगे? मैं मुस्कुराया और बताया कि इसका सही उच्चारण असाना नहीं, आसन कहें तो अच्छा लगेगा। उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ, कहने लगीं, मिस्टर आ. ने तो ऐसा कभी भी नहीं कहा। वे तो सदैव असाना ही कहा करते थे। मैंने यह कहकर बात समाप्त कर दी कि हो सकता है मि. आ. ने आप लोगों की सुगमता के लिए ऐसा कह दिया होगा। महिला ने शब्द को सुधारने के लिए कई बार धन्यवाद किया। मूल कार्य के साथ जितने भी आसन,मुद्राएं और क्रियाएं उन्होंने श्री आ. के साथ सीखी थीं, उनके सही उच्चारण भी सुधारता गया। प्रसन्नता की बात यह थी कि वे लोग हिन्दी के उच्चारण बिना किसी कठिनाई के बोल सकते थे। त और द बोलने में उन्हें आपत्ति अवश्य थी जिसको पचाने में कोई आपत्ति नहीं थी। जब श्री आ. वापस आकर अपने विद्यार्थियों से मिले तो अगले दिन मुझे मिलने आए और हंसते हुए कहने लगे, यह कार्य तो मुझे आरम्भ में ही कर देना चाहिए था। इसके लिए धन्यवाद!

माई नेम इज़ अर्जुन वर्मा..... . गीता के विषयों की चर्चा करते हुए सारे पात्र अर्जुना, भीमा, नकुला, कृश्ना, दुर्योधना, भीष्मा, सहदेवा आदि बन गए। विडम्बना यह है कि वे स्वयं अर्जुन ही रहे और गीता के अर्जुन अर्जुना बन गए। बाद में जब भोजन के समय अकेले में मैंने इस बात पर संक्षिप्त रूप से उनका ध्यान आकर्षित किया तो कहने लगे ये लोग गीता अंग्रेज़ी में पढ़ते हैं तो उनके साथ ऐसा ही बोलना पड़ता है। मैंने कहा, वर्मा जी आप तो संस्कृत और हिन्दी में ही पढ़ते हैं। वर्मा जी ने हंसते हुए यह कहकर बात समाप्त कर दी, मैं आपकी बात पूर्णतय: समझ रहा हूं, मैं आपकी बात को ध्यान में रखूंगा।

अपने एक मित्र का यह उदाहरण अवश्य देना चाहूंगा। बात, फिर वही लंदन की है। आप जानते ही हैं कि हरे कृष्ण मंदिर विश्व के कोने कोने में मिलेंगे जिनका सारा कार्य-भार विभिन्न देशों के कृष्ण-भक्तों ने सम्भाला हुआ है। गौर वर्ण के लोग भी अपनी पूरी सामर्थ्यानुसार अपना योग दे रहे हैं। मेरे मित्र (नाम आगे चलकर पता लग जाएगा) इस मंदिर में प्रवचन सुनकर आए थे। मैंने पूछा, भई आज किस विषय पर चर्चा हो रही थी। हमें भी इस ज्ञान-गंगा में यहीं पर गोता लगवा दो।

कविता

नन्ही बुलबुल के तराने

एक नन्ही बुलबुल
गा रही है
इन घने गोल पेड़ों में
कहीं छुप छुप कर
गा रही है रह-रह कर
पल दो पल के लिए
अचानक चुप हो जाती है
तब और भी व्याकुलता
जगाती है
तरानों के बीच उसका मौन
कितना सुनाई देता है !
इन घने पेड़ों में वह
भीतर ही भीतर
छोटी छोटी उड़ानें भरती है
घनी टहनियों के
हरे पत्तों से
खूब हरे पत्तों के
झीने अँधेरें में
एक ज़रा कड़े पत्ते पर
वह टिक लेती है
जहाँ जहाँ पत्ते हिलते हैं
तराने उस ओर से आते हैं
वह तबीयत से गा रही है
अपने नये कंठ से
सुर को गीला करते हुए
अपनी चोंच को पूरा
खोल कर
जितना हम आदमी उसे
सुनते है
आसपास के पेड़ों के पक्षी
उसे सुनते हैं ज़्यादा
नन्ही बुलबुल जब सुनती है
साथ के पक्षियों को गाते
तब तो और भी मिठास
घोलती है
अपने नये सुर में
यह जो हो रहा है
इस विजन में पक्षीगान
मुझ यायावर को
अनायास ही श्रोता बनाते हुए
मैं भी गुनगुनाने को होता हूं
पुरानी धुनें
वे जो भोर के डूबते तारों
जैसे गीत!

असाधारण नायक की कहानीं ओम पुरीं

संजीव ठाकुर

ओम पुरी एक ऐसे शख्स का नाम है जो विवादों से दूर भागता है मगर विवाद हैं कि उसके पीछे दौड़े चले आते हैं। पहले अपनी किताब, बाद में पत्नी से अलगाव और उसके बाद दोनों पत्नियों के झगड़े ने ओम पुरी को परेशान किया। लेकिन इस बार ओम पुरी ने मुसीबत खुद ही मोल ली है। अन्ना हजारे को समर्थन देने पहुंच गए रामलीला मैदान और दे डाला धुआंधार भाषण। लोगों को एक साथ आक्रोश और अर्धसत्य जैसी ओमपुरी अभिनीत फिल्में याद आ गई। पेश है उनकी पुस्तक की समीक्षा पिछली शताब्दी के आठवें दशक में हिंदी सिनेमा में कला फिल्मों का एक ऐसा दौर आया था जिसमें देश की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक समस्याओं को काफी गहराई में जाकर पर्दे पर दिखलाने की कोशिश की गई थी। कला फिल्मों ने आकर्षक चेहरे और आकर्षक शरीर वाले नायकों की जगह बिल्कुल आम आदमी की शक्ल-सूरत वाले अभिनेताओं को तरजीह देकर भी एक क्रांतिकारी काम किया था। नसीरुद्दीन शाह, ओमपुरी, कुलभूषण खरबंदा, अनुपम खेर, नाना पाटेकर, शबाना आजमी, स्मिता पाटिल जैसे कलाकार उसी दौर में उभर कर सामने आए थे और अपने वास्तविक अभिनय के बल पर कला फिल्मों की जान बन गए थे। व्यावसायिक फिल्मों के अभिनेताओं जैसा भव्य रूप-सौंदर्य इन्हें भले ही न मिला हो, अभिनय के मामले में ये उन सुदर्शन-पुरुषों से बहुत आगे थे। और रूप-सौंदर्य में सबसे निचले पायदान पर खड़े ओमपुरी जैसे अभिनेता ने तो अभिनय के बल पर अपनी अंतर्राष्ट्रीय पहचान तक बना ली थी। अभाव और संघर्ष में बचपन और जवानी गुजारने वाले ओमपुरी के संघर्षों, सफलताओं, जीवन जीने के तरीकों आदि पर उनकी पत्नी नंदिता सी.पुरी ने अंग्रेजी में एक किताब लिखी है, जिसका हिंदी अनुवाद असाधारण नायक ओमपुरी अब पाठकों के लिए उपलब्ध है। पत्नी होने के बावजूद नंदिता जी ने इस किताब में ओमपुरी की तारीफ में कसीदे नहीं पढ़े हैं बल्कि आश्चर्य की बात है कि नंदिता जी ने इतनी बेबाकी से यह किताब कैसे लिखी? इस किताब में कई ऐसे प्रसंग हैं जिन्हें छुपाया जा सकता था मगर उन्होंने उन सबको उजागर करना ही जरूरी समझा। हालांकि वह ओम पुरी के उस आग्रह को मान लेती जिसके तहत उन्होंने अपने जीवन में आई स्त्रियों का नाम उजागर न करने की बात कही थी तो शायद बेहतर होता। ओम पुरी ने बचपन से ही बहुत संघर्ष किया। पांच वर्ष की उम्र में ही वे रेल की पटरियों से कोयला बीनकर घर लाया करते थे। सात वर्ष की उम्र में वे चाय की दुकान पर गिलास धोने का काम करने लगे थे। सरकारी स्कूल से पढ़ाई कर कॉलेज पहुंचे। छोटी-मोटी नौकरियां तब भी करते रहे। कॉलेज में ही यूथ फेस्टिवल में नाटक में हिस्सा लेने के दौरान उनका परिचय पंजाबी थिएटर के पिता हरपाल तिवाना से हुआ और यहीं से उनको वह रास्ता मिला जो आगे चलकर उन्हें मंजिल तक पहुंचाने वाला था। पंजाब से निकलकर वे दिल्ली आए, एन.एस.डी. में भर्ती हुए। लेकिन अपनी कमजोर अंग्रेजी के कारण वहां से निकलने की सोचने लगे। तब इब्राहिम अल्काजी ने उनकी यह कुंठा दूर की और हिंदी में ही बात करने की सलाह दी। धीरे-धीरे अंग्रेजी भी सीखते रहे। हालांकि बकौल नंदिता पुरी अंग्रेजी फिल्मों में उनके काम करने के बावजूद अंग्रेजी बोलने का उनका पंजाबी ढंग अभी तक गया नहीं है। ओम पुरी की इस जीवनी का नामकरण करने में सुप्रसिद्ध फिल्मकार श्याम बेनेगल की भूमिका रही है। उन्होंने ओम को असाधारण नायक कहकर निश्चय ही कोई गलती नहीं की है। लेकिन इस असाधारण नायक की जीवनी पढ़कर लगता है कि वे अब भी साधारण व्यक्ति हैं- पत्नी पर गला फाड़कर चिल्लाने वाले, बच्चे पर जान छिड़कने वाले, खर्च के बाद पैसे का जोड़-घटाव करने वाले, सोते समय भयानक खर्राटे लेने वाले...!

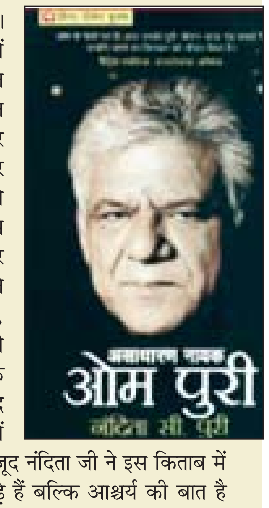

POWERED WOM
(DEDICATED TO SAVIT
BINA BHAGAT

POWERED WOMEN A
(DEDICATED TO SAVITRI BAI P
DEVIKA KANSARA

देविका कंसारा और बीना भगत को समाज सेवा के लिए मिला अवॉर्ड

सूरत। डीपी मांगुकिया पाठशाला के प्रधानाचार्या व ट्रस्टी देविका बेन कंसारा व बीना भगत को समाज सेवा के लिए उत्कृष्ट कार्य किए जाने के बदले उन्हें अवॉर्ड देकर सम्मानित किया गया। मिली जानकारी के अनुसार देश की प्रथम महिला शिक्षिका सावित्री बाई फुले समर्पित एम्पावर्ड वुमेन अवॉर्ड 2018 के लिए सूरत की प्रसिद्ध स्व. डीपी मांगुकिया पाठशाला की प्रधानाध्यापिका एवं ट्रस्टी तथा सूरत की क्रिमिनल वकील व सामाजिक कार्यकर्ता बीना भगत को चयनित किया गया था। दोनों महान हस्तियों को हरियाणा की करनाल प्रतिमा रक्षा सम्मान समिति द्वारा 2018 में एम्पावर्ड वुमेन के आयोजन में सम्मानित किया गया। जिसमें देश भर में विविध क्षेत्र से नाम कमाने वाली महिलाओं को भी 3 जनवरी को करनाल में सम्मानित किया गया।

अडाजण के रेस्टोरेंट में लगी भीषण आग

रेस्टोरेंट में फायर निरोधी कोई सुविधा नहीं थी

संवाददाता, सूरत। अडाजण क्षेत्र स्थित चार मंजिल की कामर्शियल बिल्डिंग में के एक रेस्टोरेंट में सॉर्ट सर्किट के कारण अचानक आग लग गई थी। आग से हलाकि किसी तरह की जानहानि तो नहीं हुई लेकिन वहां का कीमती फर्निचर जलकर खाक हो गया। जांच के दौरान पता चला कि रेस्टोरेंट में फायर सेफ्टी की कोई सुविधा उपलब्ध नहीं थी। मुम्बई की होटल में लगी आग के बाद से शहर का फायर विभाग तेवर में जरूर आ गया है और पिछले तीन-चार दिनों से शहर की होटलों-रेस्टोरेंटो की जांच शुरू किया है। जिसमें करीब 31 होटलों-रेस्टोरेंटों को फायर की सुविधा न करने के लिए उनको नोटिस जारी किया है।

इसी बीच ही अडाजण क्षेत्र में आने वाले रीयल पेपरिका नामक रेस्टोरेंट में शॉर्ट सर्किट के कारण आग लगने की घटना से फायर विभाग सकते में आ गया और स्थल पर जाकर आग को काबू में करने की कार्रवाई करने के साथ ही सेस्टोरेंट में फायर की सुविधा है कि नहीं, इस बारे में भी जांच की। जांच से पता चला कि रेस्टोरेंट में फायर सेफ्टी की कोई भी सुविधा नहीं की गई है। जिसको लेकर फायर विभाग ने लापरवाह रेस्टोरेंट संचालक को स्थल पर ही नोटिस थमा दिया है।

आपूर्ति विभाग का छापा यथावत, उधना का दुकानदार पकड़ाया

संवाददाता, सूरत। शहर में आपूर्ति विभाग की कार्रवाई लगातार जारी है। विभाग द्वारा शुरू किए गए छापा अभियान के अंतर्गत पिछले दिनों से फर्जी तरीके से राशन वितरण करने वाले सरकारी राशन के दुकानदोरों में हड़कंप मचा हुआ है। आपूर्ति विभाग ने इसी क्रम में उधना के शुभ रेसीडेंसी की राशन की दुकान पर छापा मारकर वहां से कई तरह की गड़बड़ी पाए जाने पर दुकानदार के खिलाफ कानूनी कार्रवाई शुरू किया है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार आपूर्ति विभाग द्वारा उधना के शुभ रेसीडेंसी में आने वाली सरकारी राशन की दुकान पर छापा मारा गया। जहां दुकानदार बायोमेट्रिक मशीन में गड़बड़ी करके ग्राहकों को मानकता के हिसाब से राशन न देकर उनके राशन को अधिक कीमत पर बेचने की वास्तविकता सामने आई। आपूर्ति विभाग ने इसी क्रम में उधना के शुभ रेसीडेंसी की राशन की दुकान पर छापा मारकर वहां से कई तरह की गड़बड़ी पाए जाने पर दुकानदार के खिलाफ कानूनी कार्रवाई शुरू किया है। जिससे विभाग ने सरकारी राशन के दुकानदार संपत लाला रोडलाला शाह के खिलाप धोखाधड़ी और सरकार के नियमों का उलंलघन करने जैसी कई धाराओं के तहत मामला दर्ज करके उसके खिलाफ कानूनी कार्रवाई शुरू किया है।

अनुशासित व्यक्ति ही जीवन में सफल होता है: सुधांशुजी महाराज

लम्बी उम्र व निरोग रहने के लिए प्राणायाम जरूरी

सूरत। रिया प्लॉट में चल रहे विशाल सत्संग कार्यक्रम के तीसरे दिन शनिवार को सुबह योग साधना का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान अन्र्तराष्ट्रीय संत सुधांशुजी महाराज ने कहा कि मनुष्य को अनुशासन सफल बनाता है। जो लोग कहते है कि मेरी मर्जी व रोगी होते है। वे अपने मिशन में कभी भी सफल नही हो सकते हैं। जिसकी सुबह अच्छी होगी। उसकी शाम भी अच्छी होगी। उम्र कीमती है तो उसके लिए समय कीमती है। वक्त संभालने के लिए अनुशासित होना जरूरी है। अनुशासित व्यक्ति प्रकृति के दिए हुए ब्रेक का इस्तेमाल करता है। जिससे वह गड्डे में गिरने के बजाय उचांई की ओर बढ़ता है। हम सबका गोत्र उत्सव व जाति आनंद है। व्यक्ति की अंतिम सफलता आनंद है। इसलिए परमात्मा व महात्मा के नाम के अंत में आनंद शब्द जुड़ा होता है। जैसे परमानंद,सच्चिदानंद और वासुदेवानंद आदि-आदि। सुधांशु जी महाराज ने लोगों को निरोग व लम्बी उम्र के लिए साधना व प्राणायाम कराया। इस अवसर पर आचार्य रामकुमार पाठक, राजकुमार पाठक, राजधर राय, रामबली दूबे वासुदेवानंद, राघोराम शुक्ला, रेखा शुक्ला, मनोज संतोष शुक्ला, अनिल दूबे बबलू, महाबली दूबे, प्रीति दूबे, साक्षी शुक्ला, मनीषा शुक्ला, शिवानी शुक्ला सहित काफी तादाद में लोग मौजूद रहे।

पांडेसरा की खाड़ी से मिली लाश की हुई पहचान

संवाददाता, सूरत। पांडेसरा के विनायक नगर स्थित प्रभुनगर खाड़ी के किनारे से प्लास्टिक की बोरी में भरी गई एक युवक की रत शुक्रवार को लाश मिली थी। जिसकी पहचान रामब्रिज के रूप में हुई है। पांडेसरी पुलिस हत्या का मामला दर्ज करके जांच शुरू की है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार पांडेसरा के विनायक नगर स्थित प्रभुनगर के पास जय महादेव नगर के पीछे से जाने वाली खाड़ी के किनारे से एक अज्ञात युवक की सड़ी-गली लाश प्लास्टिक की बोरी में शुक्रवार को लाश मिली थी। घटना के बारे में जानकारी होने पर पांडेसरा पुलिस स्थल पर पहुंच कर मामले की जांच शुरू की तो लाश की पहचान 23 वर्षीय शीर्षक रामब्रिज सहानी के रूप में हुई।

युवक की किसी ने हत्या करके रस्सी से बांधकर प्लास्टिक की बोरी में पत्थर के साथ भरकर खाड़ी में फेंक दिया था। मृतक की पहचान शीर्षक रामब्रिज सहानी हरिओम नगर के बगल शिवम नगर प्लोट नं. 252, 253 पांडेसरा सूरत और मूल निवाली औरंगाबाद, गुलहरिया बाजार गोरखपुर उत्तर प्रदेश के रूप में हुई है। पांडेसरा पुलिस हत्यारे का पाता लगने में जुट गई है।

अडाजण की महिला ने लाई फांसी

संवाददाता, सूरत। शहर के अडाजण स्थित सन अपार्टमेंट में रहने वाली विवाहिता ने किसी कारणों से अपने घर में फांसी लगा कर आत्महत्या कर ली। अडाजण पुलिस रिपोर्ट दर्ज करके मामले की जांच कर रही है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार अडाजण स्थित सन अपार्टमेंट सी-11 स्टार बाजार के पीछे रहने वाले धवल धीरजभाई तालियावाला की पत्नी सीमाबेन 25 वर्ष ने गत रोज शाम को किसी अज्ञात कारणों से अपने बेडरुम में पंखा के साथ फांसी लगा कर आत्महत्या कर लीं।

डिवाइडर से बाइक टकराने पर युवक की मौत

सूरत। पांडेसरा के गणेशनगर एसएमसी आवास में रहने वाला युवक आपने दो मित्रों के साथ बाइक से साथ नास्ता करने जा रहे थे। उसी समय बाइक डिवाइडर से टकरा जाने से एक की मौत हो गई जबकि दो अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। पांडेसरा के वडोदगांव गोकुलधाम सोसाइटी एसएमसी आवास रुम नं. 15 बिल्डिंग नं. 26 में रहने वाले राजूभाई महाजन के 22 वर्षीय पुत्र आकाश बिल्डिंग नं. 35/बी रुम नं. 26 में रहने वाला उसका मित्र मंगल आशाराम महाजन (19 वर्ष), तथा नवीन गत रोज नास्ता करने के लिए बाइक से वडोद तीन रास्ता पर जा रहे थे।

वगौर लाइसेंस सिक्युरिटी संचालक गिरफ्तार

सूरत। वैगर लाइसेंस मास्टर गार्ड फोर्स के नाम से सिक्युरिटी चलाने वाले संचालक को पुलिस ने गिरफ्तार किया। आरोपी अपने सिक्युरिटी गार्ड को वेसु इलाके में स्थित भगवान महावीर एजुकेशन फाउन्डेशन कालेज में लगा रखा था। सूचना के बाद गश्त के दौरान पुलिस ने सिक्युरिटी संचालक को गिरफ्तार कर कार्रवाई शुरू की। पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार एसओजी टीम सूरत शहर के वेसु इलाके में गश्त कर रही थी। पेट्रोलिंग टीम को सूचना मिली कि इलाके भगवान महावीर एजुकेशन फाउंडेशन कॉलेज में बिना लाइसेंस के सिक्युरिटी संचालक ने मास्टर गार्ड फोर्स नाम से सिक्युरिटी चला रखा है। और वह अपने गार्ड को कॉलेज सुरक्षा के लिए लगा रखा है। सूचना के बाद एसओजी टीम भगवान महावीर कॉलेज पहुंची और सिक्युरिटी संचालक को कॉलेज के छत पर बने रूम से गिरफ्तार कर लिया।

9.67 लाख की जाली नोटों के साथ दो गिरफ्तार, एक फरार

भावनगर (ईएमएस)। जिला एसओजी और वल्लभीपुर पुलिस ने संयुक्त ऑपरेशन कर रु. 2000 और रु. 500 के दर की रु. 9,67,500 की जाली नोटों के साथ दो शख्सों को गिरफ्तार कर लिया। जबकि एक शख्स अंधेरे का फायदा उठाकर फरार हो गया। जानकारी के मुताबिक पूर्व सूचना के आधार पर भावनगर जिला एसओजी और वल्लभीपुर पुलिस की टीम बरवाला रोड पर निगरानी कर रही थी। उस वक्त स्प्लेंडर मोटर साइकिल पर सवार तीन शख्सों को रोकने का पुलिस ने प्रयास किया। लेकिन पुलिस को देख बाइक सवारों ने अपनी गाड़ी की गति बढ़ा दी। पुलिस ने फिल्मी अंदाज में बाइक सवारों का पीछा किया और अयोध्यापुरम-नवागाम रोड पर जिया फैक्ट्री के निकट दो शख्सों को उस समय दबोच लिया जब वे अपनी बाइक छोड़कर भागने का प्रयास कर रहे थे। हांलाकि तीसरा शख्स रात के अंधेरे का फायदा उठाकर भागने में सफल हो गया। पुलिस की गिरफ्त में आया पहला शख्स भावनगर जिले की वल्लभीपुर तहसील के राजपरा गांव का निवासी 32 वर्षीय जगा रेवाभाई भुरखिया और दूसरा बोटाद जिले के लाठीदड गांव का निवासी 43 वर्षीय दलसुखभाई भीखाभाई भावनगरिया है। जबकि पुलिस को चकमा देकर फरार शख्स अशोक जेटाभाई चोसला बोटाद जिले के समतियाला गांव का निवासी है।

पुलिस कमिश्नर ने किया सिविल अस्पताल का औचक निरीक्षण

सिविल में हुए अतिक्रमण को तत्काल हटाने का दिया आदेश

संवाददाता, सूरत। सिविल अस्पताल सुप्रिटेंडेट द्वारा रास्ता खुला करने के लिए की गई कमिश्नर से शिकायत के बाद शनिवार को पुलिस कमिशनर सतीश शर्मा ने सिविल अस्पताल की सुरक्षा व्यवस्था का निरीक्षण किया। इसी के साथ ही साथ वहां के सीसीडटीवी कैमरे का निरीक्षण कर बाहर बैठने वाले फेरिए और रिक्शा के अतिक्रमण को हटाने का आदेश किया है।

सिविल अस्पताल प्रशासन द्वारा एलबी से मजूरागेट ओवर ब्रिज के नीचे रास्ते को खुला कराने की मांग की गई थी। क्योंकि सिविल के सुप्रिटेंडेट ने भी इस शिकायत को ध्यान में लेकर निरीक्षण किए थे। इस लिए सिविल के सुप्रिटेंडेट ने इसकी शिकायत पुलिस कमिश्नर से किए थे। जिससे पुलिस कमिश्नर के आदेश के बाद वहां पर डिवाइडर लगा दिया गया था। वाहन चालकों द्वारा रॉग साइट से वाहन चलाने के कारण प्राय: दुर्घटनाएं भी होती थीं।

इसके बाद पुलिस कमिश्नर सतीश शर्मा ने सिविल अस्पताल का स्वत: निरीक्षण कर वहां की सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया और अस्पताल के पास हुए अतिक्रमण को शीघ्र हटाने का आदेश दिया है।

मा. सुबाष मौर्य मा.अच्छेलाल मौर्य मा. सुरेश मौर्य मा. अशोक मौर्य मा. नवनीत मौर्य मा. दिनेश बागुल मा. ओमप्रकाश डॉ. चंद्रकांत पाटील मा.राधेश्याम मौर्य

एकीकरण एवं जागरूकता अभियान
ग्रामसभा/वार्ड स्तरीय टीम का गठन
दिन: रविवार,दिनांक: 14 जनवरी-2018, समय: सायं 4:00 -8:00 बजे तक

हमारी आवाज बनेगी,भारत की आवाज
हम मिलकर बनायेंगे अपने,सपनों का भारत-अखंड भारत
हम मिलकर करेंगे, अपनी हर समस्या का समाधान !

आज ही हमसे जुड़ें !
सिर्फ मिस्ड कॉल करें
8076615402

आइये, हम सबमिलकर
अखंड भारत की नीव पुन: रखें

सभी क्षेत्रवासी सादर आमंत्रित हैं !

कार्यक्रम स्थल
ग्रामसभा सिरकिना, सिंगरामऊ-महुली मार्ग
बौद्ध विहार के समीप, बदलापुर,
जौनपुर, उत्तरप्रदेश

सम्पर्कसूत्र
8200090286/ 9891367219
9322986911/ 9819506427

Estd-2016
Reg. No - 8902089
सत्यमेव जयते
SPYFI-INDIA
always with you!

मुख्य अतिथि
मा. आर. पी. द भारतीय
(अखंड भारत)
राष्ट्रीय अध्यक्ष
PH-9718554504/9891367219

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक व प्रकाशक सुरेश मौर्या द्वारा तापीलोक पब्लिकेशन 152,153 श्री राम इंडस्ट्रीयल एरिया पांडेसरा सूरत 394210 से मुद्रत, एवं 4 ओ-ब्लाक आगम नवकार कॉम्पलेक्ष सचीन रेल्वे स्टेश के पास,
सूरत, जि. सूरत, गुजरात से प्रकाशित, **संपादक :- सुरेश मौर्या** फोन नं. (9879141480) **Tc.No. : GUJHIN00722**, E-mail: krantisamay@gmail.com